प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

निजी क्षेत्र द्वारा कृषि में शिक्षण से उत्पन्न चुनौतियां होंगी कार्यशाला का मुख्य मुद्दा

पंतनगर। 09 मई 2019। पंतनगर विश्वविद्यालय में 'कृषि विश्वविद्यालय शासन प्रणाली : परिवर्तन और चुनौतियों की प्रेरक शक्ति' विषय पर भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आई.ए.यू.ए.) की आठवीं दो-दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का आयोजन आज कृषि व्यवसाय प्रबंधन महाविद्यालय के सभागार में हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष एवं कुलपति जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़, गुजरात, डा. ए.आर. पाठक, के साथ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, के उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा), डा. एन.एस. राठौर और कुलपति, आनन्द कृषि विश्वविद्यालय आनन्द, गुजरात, डा. एन.सी. पटेल, एवं पंतनगर के कुलपति, डा. तेज प्रताप, मंचासीन थे।

मुख्य अतिथि डा. पाठक ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों की लैंडग्रांट पद्धति से हुई शुरूआत अब बिना भूमि व अनुदान की स्थिति में परिवर्तित हो गयी है, जिसके कारण आ रही समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आगे की सोच विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान कृषि स्नातक से कृषि के साथ-साथ औद्यानिकी, पशुपालन इत्यादि की समस्याओं के समाधान की भी अपेक्षा रखता है, अतः कृषि विश्वविद्यालयों को अपने कृषि शिक्षण को एकीकृत करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आज विद्यार्थियों की पहली पसंद, चिकित्सा शिक्षा के बाद, कृषि शिक्षा ही है, जिसे ध्यान में रखकर कृषि शिक्षा की भविष्य की रणनीति बनाये जाने की आवश्यकता है। डा. पाठक ने यह भी कहा कि निजी कृषि विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिक संख्या के कारण देश में कृषि स्नातकों की उपलब्धता तीन गुना अधिक हो गयी है, जिससे बेरोजगारी बढ़ना स्वाभाविक है। कार्यशाला में उपस्थित कुलपतियों को देश की कृषि व कृषि शिक्षण का हितैषी बताते हुए उन्होंने कहा कि सभी को मिलकर कृषि विश्वविद्यालयों की समस्याओं का समाधान करने के बारे में विचार-विमर्श कर उचित संस्तुतियां की जानी चाहिए।

डा. राठौर ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का ध्येय कृषि में ज्ञान उपलब्ध कराना तथा कृषि शिक्षा में गुणवत्ता बनाये रखना है। उन्होंने कहा कि निजी क्षेत्र के अधिकतर विश्वविद्यालयों में कृषि शिक्षण हेतु आवश्यक शिक्षक व सुविधायें उपलब्ध नहीं है, लेकिन कुछ विश्वविद्यालय अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। कृषि शिक्षा में गुणवत्ता बनाये रखने हेतु परिषद निजी कृषि विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन (एक्रीडिटेशन) भी कर रही है तथा ऐसे विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को ही उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु परिषद से पोषित संस्थागत कृषि विश्वविद्यालयों में प्रवेश दिया जा रहा है। इसके साथ ही साथ उन्होंने शिक्षक, वैज्ञानिक, एवं प्रसार अधिकारियों के दायित्वों एवं कार्यों के पृथकीकरण को आवश्यक बताया। डा. राठौर ने कृषि विश्वविद्यालयों से अपनी स्थिति को सही परिपेक्ष्य में नीति निर्माताओं के सामने रख उनको जागरूक करने के लिए भी कहा।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में कुलपति, ने उपस्थित कुलपतियों का स्वागत करते हुए इस कार्यशाला की रूप-रेखा से अवगत कराया तथा वर्तमान में निजी विश्वविद्यालयों द्वारा बड़ी संख्या में कृषि स्नातक तैयार करने से संस्थागत विश्वविद्यालयों व उनके कृषि स्नातकों के सामने आने वाली समस्याओं के बारे में विचार करना कार्यशाला का मुख्य बिन्दु बताया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के २७ कुलपति एवं प्रतिनिधि उपस्थि थे। कार्यक्रम का संचालन डा. एस. के. कश्यप, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, कृषि संचार विभाग, ने किया। इससे पूर्व उपस्थित कुलपतियों ने महाविद्यालय के प्रांगण में पौधा रोपण भी किया।

उद्घाटन सत्र के बाद मंचासीन अतिथियों द्वारा मीडिया प्रतिनिधियों के साथ वार्ता भी की गयी तथा इस कार्यशाला के कृषि शिक्षा, शोध व प्रसार के क्षेत्रों में आने वाली समस्याओं एवं उनके निराकरण हेतु रणनीति तैयार करने के उद्देश्य के बारे में बताया, साथ ही मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा पूछे गये सवालों का उत्तर दिया।

आई.ए.यू.ए. कार्यशाला में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को संबोधित करते डा. ए.आर. पाठक, अध्यक्ष आई.ए.यू.ए.